Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 2 | February 2025

सरहुल पर्व (आदिवासियों का नववर्श)

सत्येन्द्र कुमार[1], मनीराम उइके[2]

[1] सहायक प्रध्यापक समाजशास्त्र

[2] समाजशास्त्र छात्र

संगीत और नृत्य कला छत्तीसगढ़ के जीवन के स्पंदन है जो कि आदिवासी लोग जीवन की कर्म मूलक गतिविधियां और सौंदर्य बोध में इतने परस्पर मिले जुले है कि कई बार जीवन की गतिविधियां एवं कला में अंतर करना कठिन हो जाता है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में लोक कथाओं पर आधारित एक महत्वपूर्ण सरहुल पर्व छत्तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा, पष्चिम बंगाल, बिहार में हर्ष उल्लास एवं धुमधाम के साथ मनाया जाता है।

सरहुल का शाब्दिक अर्थ होता हैं सर+हुल सर का शाब्दिक अर्थ साल का वृक्ष तथा हुल का अर्थ क्रांति और क्रांति का अर्थ होता है मौलिक परिवर्तन अर्थात साल के वृक्ष का मौलिक परिवर्तन को ही हम सरहुल के नाम से जानते हैं। यह पर्व चैत्रमाह के पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है।

यह पर्व को अलग–अलग जनजातियों के द्वारा अलग–अलग नामों से जाना जाता हैः
जैसेः

1. मुण्डाः बा पोरोब
2. संथालः बहा हिन्दी में इसका शाब्दिक अर्थ फुल होता है।
3. उरांवः खेखल बेन्जा, खद्दी खेखल बेन्जा का अर्थ है विवाह और खद्दी का अर्थ होता है जन्मोत्सव
4. खड़ियाः जंकोर, इसका अर्थ है अंकुरित होना
5. सदानः सरहुल

इनके अलावा भी यह पर्व को अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है जैसे – फूलों का उत्सव, प्रकृति का पर्व, फूलों की क्रांति, सृजन और सौंदर्य का पर्व, धरती एवं सुर्य का विवाह।

वैसे इस पर्व को मनाने के पीछे जनजातियों में अनेक कविदन्तिया मौजुद है इसी में उरांव जनजाति का मान्यता है कि जब उरांव जनजाति धरती क्षेत्र में निवास कर रहे थे तो वे बहुत सुखी एवं समृद्धि जीवन यापन कर रहे थे यह सब देखकर दो राक्षसों को इस जनजाति पर ईर्श्या हुई और व उरांव जनजाति के निवास क्षेत्र में विशाल रूप धारण कर पहुंचा जिसका मुँह गुफा के समान बड़ा था उसके मुख से एक रास्ता निकलकर बाहर आया था और इसी रास्ता को देखकर उस राक्षस के मुख में सभी लोग घुसते गये और फिर कभी वापस नहीं लौटे इस प्रकार दिन प्रतिदिन उरांव जनजाति की जनसंख्या घटती गई इसे देखकर उरांव जनजाति ने इस समस्या को पार लगाने के लिए अपने ईष्टदेव धर्मेश के पास विनती की और उरांव जनजाति की करूण पुकार सुनकर धर्मेश घोड़े पर सवार होकर हाथ में तलवार लिए राक्षस के मुख के अंदर घुस गया और राक्षस को मार डाला राक्षस बहुत दिनों से निर्जीव हालत होने के कारण शरीर धीरे–धीरे खराब होने लगे और उसके शरीर से दुर्गंध आने लगा जिससे लोगों में महामारी जैसी बीमारियां तेजी से फैलने लगी। तभी इस दुर्गंध शरीर को जलाने के लिए धर्मेश आग की वर्षा करने लगे जिससे बचने के लिए लोग किसी नदी नाले तथा गुफाओं के अंदर छिपने लगे। जब आग शांत हो गयी और फिर से प्रकृति के अंदर नये पत्ते फूल लग गये जिसके कारण उरांव जनजाति यह पर्व को मनातें है।

मुण्डा जनजाति के अनुसारः जब महाभारत युद्ध हो रहा था उस समय मुण्डा जनजाति के लोगों ने कौरव सेना के साथ मिलकर पाण्डव के विरूद्ध युद्ध किया इस लड़ाई में अनेक मुण्डा जनजाति के सेनानियों पाण्डव के साथ युद्ध करते हुए मारे गये थे, जिनके शवों को पहचान के लिए साल के पत्ते से ढंके गये थे । कहतें है कि जो शव साल के पत्ते से ढंके हुए थे वह सुरक्षित अवस्था में थे और जो शव साल के पत्ते से न ढंके हुए थे उनकी अवस्था खराब हो गयी थी।

उरांव जनजाति की मान्यताः उरांव जनजाति कहतें हैं कि धरती माँ कुंवारी थी अर्थात अविवाहित थी जिसके कारण प्रकृति के अंदर सुखा तथा अनेक प्रकार के आपदाएं आते थे, साथ ही प्रकृति के जीव–जंतु, वृक्ष तेजी से मर रहें थे तो धरती और सुर्य का विवाह कराने से ध रती सुहागन बन जाएगी और उसके गोद हरे–भरे हो गये ।तब से ऐसा मानकर उरांव जनजाति धरती और सुर्य का विवाह करातें हैं।

अन्य मान्यताः धरती और सुर्य के विवाह से धरती माँ की एक बच्ची जिसका नाम बिन्दी था वह पैदा हुई। और एक दिन अचानक खेलते–खेलते वह पाताल लोक चली गई और बिन्दी को पाताल लोक के लोग देखकर अत्यंत खुश हुए यहाँ से बिन्दी पाताल लोक जाने के कारण धरती माँ सुखी पड़ गयी तब यहाँ के लोगों ने बिन्दी को वापस लाने के लिए पाताल लोक से अर्जी विनती प्रार्थनाएं की तब जाकर पाताल लोक के लोगों ने बिन्दी को वापस धरती में भेजा और बिन्दी के आते ही धरती माँ फिर से हरी–भरी हो गयी।

सरहुल पर्व की विधियांः प्राचीन समय में यह पर्व की शुरूआत शिकार से होता था अब धरती और सूर्य के विवाह से होता है। जब यह पर्व शिकार से शुरूआत होता था तो इस प्रकार के गीत प्रचलित थे।

Copyright© 2025, IERJ. This open-accessArticle is published under the terms of the Creative CommonsAttribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copyAnd redistribute the material inAny medium or format)AndAdapt (remix, transform,And build upon the material) under theAttribution-NonCommercial terms.

दीदी गे दीदी भाटों कहां गे लो,
तुतर पार मंजुर मारे गे लो,
हाथा मा धनुष कांधा मा तीर कस,
भांटों मोर कहां गे लो,
तुतर पार मंजूर मारे गे लो।।

यह पर्व को जनजाति समाज में चार दिनों तक मनाने की परंपरा हैः प्रथम दिवसः पाहन द्वारा गांव के सभी लोगों के आँगन में मछली के पानी का छिड़काव करते हैं।

द्वितीय दिवसः पाहन द्वारा बांस के बने बर्तन जिसे छत्तीसगढ़ में सुपा से संबोधित किया जाता हैं उसमें साल का फूल लेकर गांव के सभी के दरवाजों में लगाया जाता है।

तृतीय दिवसः सरई के पुष्प को सरना अर्थात वह स्थल जहां पर देवता या बोंगा का वास होता हैं वहां पर अर्पित किया जाता हैं साथ ही तीन मुर्गे की बली 1. ईश्वर सर्व शक्ति मान है इस कारण ईश्वर को समर्पित किया जाता हैं। 2. गांव के देवता जो हमारी रक्षा करतें हैं। इसके लिए प्रदान किया जाता हैं। 3. पूर्वजों के लिए जो इस दुनिया को छोड़ कर चले गये हैं उनके लिए प्रदान किया जाता है तथा इसी मुर्गे एवं चावल को मिलाकर प्रसाद स्वरूप खिचड़ी बनाया जाता हैं और साथ ही जनजाति समाज के मादक द्रव्य हड़िया को भोग स्वरूप अर्पित किया जाता है उसके बाद पाहन सबसे पहले इसका ग्रहण करता है इसके बाद सभी लोगों को प्रसाद स्वरूप प्रदान किया जाता है साथ ही साथ तीन घड़े में पानी लाकर रखा जाता है लोगों की मान्यता है कि अगर घड़े के पानी कम हो जाता है तो आने वाले समय में आकाल की संभावना समझ कर भविष्यवाणी किया जाता है अगर पानी यथावत रहें तो बारिश सही समय में समान रूप से होगी ऐसा सम्भावना जतायी जाती है। इस दौरान गांव के लोग तथा पाहन द्वारा केकड़ा पकड़कर लाया जाता हैं और उसे मकान के बाहर दरवाजे पर लटका दिया जाता है। और उसे केकड़े का चुर्ण बनाकर खाद के रूप में खेतों में प्रयोग किया जाता है साथ ही यह संभावना जतायी जाती है कि जिस प्रकार केकड़े के पैरों की तरह असंख्य धान की असंख्य बालियों के रूप में पैदा होगी। इसके पश्चात गांव के सभी लोग अखरा अर्थात गांव के बीचों बीच मैदान वहां जाकर सभी लोग नृत्य करतें हैं।

चर्तुथ दिवसः नृत्य करते हुए पुरे गांव के लोग पुश्प का विसर्जन करतें हैं।

जनजाति के द्वारा उपयोग की जाने वाली साड़ी रंग के आधार पर प्रतीक हैंः
1. सफेदः पवित्रता स्वच्छता का प्रतीक – सिंग बोंगा देवता
2. लालः क्रांति या संघर्ष का प्रतीक – भुरू बोंगा देवता

संक्षिप्त शब्द संकेत
सु. सं –सुश्रुत संहिता शरीरस्थान
अ सो सू अष्टांग सोरष्टिका सूत्रस्थान
अ. ह. सू.– अष्टांग ह्रदयम सूत्रस्थान
सु. चि.– सुश्रुत संहिता चिकित्साथान
च.वि – चरक सहिता विमानस्थान
सु.सू. – सुश्रुत संहिता सूत्रस्थान
सु.चि. – सुश्रुत संहिता चिकित्सास्थान